हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम–101

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.–01/बी.एच.डी.ई.–101
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.डी.–01/टीएमए/2017–18
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3=30

क) चार दिन तक पलक नहीं झंपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूं, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।

ख) गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने सम्पूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यमय युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता हैं। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था।

ग) अपराधी जैसे दण्ड की प्रतीक्षा करता है, उसी भांति वह विवाह की प्रतीक्षा करती थी, उस विवाह की जिसमें उसके जीवन की सारी अभिलाषाएं विलीन हो जाएंगी; जब मंडप के नीचे बने हुए हवनकुंड में उसकी आशाएं जलकर भस्म हो जाएंगी।

घ) और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएं भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए, इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाद होते हैं, शेरनी के नहीं।

ङ) मुझे ऐसा लगता है कि मनुष्य अब नाखून को नहीं चाहता। उसके भीतर बर्बर-युग का कोई अवशेष रह जाए, यह उसे असहय है। लेकिन यह भी कैसे कहूं, नाखून काटने से क्या होता है। मनुष्य की बर्बरता घटी कहां है, वह तो बढ़ती जा रही है। मनुष्य के इतिहास में हिरोशिमा का हत्याकांत बार-बार थोड़े ही हुआ है। यह तो उसका नवीनतम रूप है। मैं मनुष्य की ओर देखता हूं तो कभी-कभी निराश हो जाता हूं। ये उसकी भयंकर पाश्वी वृत्ति के जीवंत प्रतीक हैं। मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी काट दो, वह मरना नहीं जानती।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15X4=60

क) 'शतरंज की खिलाड़ी' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।
ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के कथानक पर विचार कीजिए।
ग) 'घीसा' की पटकथा की विशेषताएं बताइए।
घ) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' का विश्लेषण कीजिए।
ङ) 'निर्मला' उपन्सास की मूल समस्या पर विचार कीजिए।
च) हिंदी गद्य के विकास में द्विवेदी युग के योगदान पर प्रकाश डालिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X2=10

क) भारतेंदु युगीन नाटक
ख) ध्रुवस्वामिनी का चरित्र-चित्रण
ग) निर्मला का चरित्र-चित्रण
घ) उपन्यास के तत्व
ङ) 'उसने कहा था' का सार
च) 'ठेठ' की कथावस्तु

https://www.facebook.com/IGNOUAssignmentGURU https://twitter.com/IGNOU_Guru

IGNOU ASSIGNMENT GURU (2017-2018)

B.H.D.E-101

E.H.D-1

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी गद्य

Disclaimer/Special Note: These are just the sample of the Answers/Solutions to some of the Questions given in the Assignments. These Sample Answers/Solutions are prepared by Private Teachers/Authors for the help and guidance of the student to get an idea of how he/she can answer the Questions given in the Assignments. We do not claim 100% accuracy of these sample answers as these are based on the knowledge and capability of Private Teacher/Tutor. Sample answers may be seen as the Guide/Help for the reference to prepare the answers of the Questions given in the Assignment. As these Solutions Answers are prepared by the Private Teacher/Tutor, so the chances of error or mistake cannot be denied. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing these Sample Answers/ Solutions. Please consult your own Teacher/Tutor before you prepare a Particular Answer and for up-to-date and exact information, data and solution. Student should read and refer the official study material provided by the university.

नोटः सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) चार दिन तक पलक नहीं झंपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूं, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।

उत्तर–*चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो।*

संदर्भ–उपरोक्त पंक्तियां चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी से अवतरित हैं। लहना सिंह भारतीय फौज का सिपाही है, जो इंग्लैंड की ओर से जर्मनी के विरुद्ध मोर्चे पर डटा है। वह लड़ाई का इंतजार करते-करते उकता गया है और चाहता है कि लड़ाई जल्दी से शुरू हो।

व्याख्या–चार दिन से एक पलक भी नहीं झपकी है। इसी तरह यहां पड़े रहने से क्या लाभ है। जिस प्रकार बिना दौड़े घोड़ा बेकार हो जाता है, उसी प्रकार बिना लड़े सिपाही भी बेकार हो जाता है। बेकार पड़े-पड़े सिपाही का उत्साह भी कम होने लगता है, इसलिए अच्छा यही है कि जर्मनों पर धावा बोलने का आदेश दिया जाये। उसके बाद मेरी वीरता देखिए। यदि मैं अकेला सात जर्मन सैनिकों को न मार कर आऊँ, तो मुझे दरबार साहब का दर्शन करने का अवसर न प्राप्त हो।

विशेष–(1) प्रेम, शौर्य तथा त्याग की इस अद्‌भुत कहानी में लहना सिंह के चरित्र द्वारा भारतीय किसान की जीवटता, साहस, बुद्धिमानी तथा कर्त्तव्य-परायणता को दर्शाया गया है।

(2) लहना सिंह चूंकि एक किसान है, इसलिए देशज शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग अधिक हुआ है।

(ख) गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने सम्पूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यमय युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता हैं। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था।

उत्तर–*गजाधर बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यमय युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था।*

सन्दर्भ–उपरोक्त पंक्तियां उषा प्रियंवदा द्वारा रचित कहानी 'वापसी' से ली गई हैं। गजाधर बाबू नौकरी से रिटायर होकर जब अपने परिवार के बीच रहने जाते हैं, तो उन्हें वह प्यार और अपनापन नहीं मिलता जिसकी वे अपेक्षा करते हैं। यहाँ तक कि उनकी पत्नी भी उनकी भावनाओं से अन्जान रहती है। उसी स्थिति में गजाधर बाबू विचार कर रहे हैं।

व्याख्या–जब गजाधर बाबू अपनी पत्नी से कहते हैं कि घर में बच्चे हैं, बहू है, तुम्हें और क्या चाहिए? सब सुख तो हैं। गजाधर बाबू की पत्नी मुँह बनाते हुए सो जाती है। गजाधर बाबू उसे देखते रह जाते हैं। वे सोचते हैं कि क्या यही वह स्त्री है जिसके लिए मैंने इतने वर्ष अकेले काट दिये। क्या यह वही स्त्री है जिसके कोमल हाथ सदैव मेरी सेवा में लगे रहते थे। गजाधर बाबू को लगा कि नहीं यह वह स्त्री नहीं है। वह लावण्यमयी स्त्री तो कहीं खो गई है और यह जो स्त्री है यह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है। सोती हुई अपनी पत्नी को जब गजाधर बाबू देखते हैं तो उन्हें अपनी पत्नी का भारी, बेडौल शरीर बड़ा कुरूप लगता है। उसका चेहरा उन्हें श्रीहीन और रूखा प्रतीत होता है।

विशेष–(1) अंश गजाधर बाबू अपनी पत्नी की स्मृतियों में खोये हुए हैं।

(2) भाषा सहज एवं सरल है। भाषा में पूर्वदीप्ति शैली है।

(घ) और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए.एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएं भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए, इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

उत्तर–*''और क्या साहब! देखिए कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि जब आपने अपने लड़कों को बी.ए., एम.ए. तक पढ़ाया है तब उनकी बहुएं भी ग्रेजुएट लीजिए। भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं और 'पॉलिटिक्स' वगैरह पर बहस करने लगीं तब तो हो चुकी गृहस्थी। जनाब, मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।''*

संदर्भ–उपरोक्त पंक्तियाँ श्री जगदीशचन्द्र माथुर द्वारा रचित एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' से अवतरित हैं।

प्रसंग–गोपाल प्रसाद रामस्वरूप से कहता है कि लड़के के विवाह के सम्बन्ध में उसकी निश्चित विचारधारा है। लड़की सुन्दर होनी चाहिए, परन्तु अधिक पढ़ी-लिखी न हो। अधिक-से-अधिक मैट्रिक पास हो। हमें लड़की से नौकरी तो करानी नहीं है, तो फिर पढ़ाई-लिखाई की क्या जरूरत है।

व्याख्या–लोग उससे पूछते हैं कि जब उसने अपने लड़कों को उच्च शिक्षा दिलवाई है, तो उनके लिए लड़कियाँ भी पढ़ी-लिखीं होनी चाहिए, परन्तु लोगों की सलाह गोपाल प्रसाद को पसन्द नहीं आती है। गोपाल प्रसाद ऐसे लोगों को बेबकूफ मानता है। गोपाल प्रसाद के अनुसार लड़कों और लड़कियों को बराबरी शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। पुरुषों का तो काम है ही पढ़-लिखकर काबिल बनना, परन्तु यदि स्त्रियां भी पढ़-लिख जाएंगी, तो घर-गृहस्थी कौन संभालेगा? स्त्रियों का काम घर संभालना है, बौद्धिक चर्चा करना नहीं। स्त्रियां पुरुषों के बराबर नहीं हो सकती हैं। प्रकृति ने नर को नारी से श्रेष्ठ बनाया है। मोर के पंख होते हैं मोरनी के नहीं। शेर के बाल होते है और शेरनी के नहीं। इस तरह गोपाल प्रसाद पुरुषों को स्त्रियों से श्रेष्ठ मानता है।

विशेष–(1) पंक्तियों में गोपाल प्रसाद के दिमागी पिछड़ेपन की झलक मिलती है।

(2) भारतीय समाज की दकियानूसी विचारधारा का पता चलता है।

(3) गोपाल प्रसाद के माध्यम से लेखक ने समाज की पिछड़ी मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

(4) भाषा में बोलचाल की सहजता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) 'शतरंज की खिलाड़ी' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कहानी का सार–कहानी अवध के नवाब वाजिद अली शाह के समय की है। इस समय लखनऊ विलासिता में डूबा हुआ था। मिरजा सज्जाद अली तथा मीर रौशन अली उच्च वर्गीय जागीरदार थे, परन्तु इनका सारा समय शतरंज की बाजी में ही बीतता। अधिकतर बाजी मिरजा के यहाँ ही होती थी, जिससे मिरजा साहब की बेगम चिड़ती थी। एक दिन बेगम साहिबा ने सिर दर्द के बहाने मिरजा साहब को अन्दर बुलाया तथा शतरंज वाले कमरे में जाकर सारे मौहरे बिखेर दिये। अब बाजी मीर साहब के यहाँ जमने लगी। जिसके कारण मीर साहब की बेगम अपने प्रेमी से नहीं मिल पाती थी। एक दिन मीर साहब की बेगम का प्रेमी शाही घुड़सवार बनकर आया तथा कहने लगा कि मीर साहब को मोर्चे पर जाना पड़ेगा। यह सुनते ही मीर साहब के होश उड़ गये। अब बाजी एक मस्जिद के खण्डर में होने लगी। जब अंग्रेजी फौजों ने नवाब वाजिद अली शाह को बन्दी बना लिया, तब भी ये शतरंज बाजी में ही मस्त रहे। हार-जीत को लेकर दोनों में झगड़ा हो गया, और दोनों ने एक-दूसरे को मौत के घाट उतार दिया।

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का मूल उद्देश्य क्या है? यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। यदि हम शीर्षक के आधार पर विश्लेषण करें, तो कहानी में शतरंज के दो खिलाड़ियों का चित्र खींचा गया है, परन्तु कहानी का कथ्य केवल इतना ही नहीं है। ये खिलाड़ी अपने समय के समाज को रूपांतरित करते हैं। इन खिलाड़ियों को सामने लाने से पहले कहानीकार ने नवाब वाजिद अली शाह के समय के लखनऊ के विलासी और निष्क्रिय सामाजिक जीवन की तस्वीर प्रस्तुत की है। कहानी के प्रारंभ में जो वातावरण चित्रित किया गया है, उससे पता चलता है कि शतरंज का खेल मात्र खेल नहीं है, बल्कि यह अपने देशकाल की गतिविधियों और मानसिकता को भी प्रदर्शित कर रहा है। शतरंज के खेल को हमारे समाज में अच्छा नहीं माना जाता। इसे निकम्मों का खेल माना जाता है, परन्तु वाजिद अली शाह के समय तो सभी इस विलासी खेल की बाजियों में डूबे थे, इसका अर्थ है कि सम्पूर्ण समाज अपने दायित्व तथा कर्त्तव्यों से विमुख होकर पतनशील जीवन-सुख में लिप्त था। लोगों में समाज के लिए बलिदान की भावना नहीं थी, परन्तु अपने विलास के लिए मर-मिटने की भावना अवश्य थी। बड़े-बड़े सामाजिक और राष्ट्रीय हादसों पर भी ये मौन एवं निश्चिंत बने रहते थे, परन्तु निजी जीवन में छोटी-सी घटना इन्हें बैचेन कर देती थी। लेखक ने लिखा है कि मीर और मिरजा विलासी थे, कायर नहीं। उनमें राजनीतिक भावों का अध:पतन हो गया था। व्यक्तिगत वीरता का उनमें अभाव न था, इसलिए जब ईस्ट इण्डिया कंपनी के सैनिकों ने लखनऊ में घुसकर नवाब वाजिद अली शाह को बन्दी बना लिया, तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा, वे निश्चिंत बने रहे परन्तु वे शतरंज में अपने-अपने वजीरों को बचाने के लिए आपस में झगड़ पड़े। आपसी झगड़े में उनका खानदानी अहंकार जाग उठा तथा वे एक-दूसरे पर ही तलवार से वार कर बैठे तथा मृत्यु को प्राप्त हो गये। यह केवल शतरंज के दो खिलाड़ियों का अन्त नहीं है वरन् एक पतनशील समाज का भी है, जो मूल्यों और कर्त्तव्यों के लिए जान नहीं देता, बल्कि अपनी विलासिता की पूर्ति के लिए जान दे देता है। सामाजिक और राजनीतिक चेतना से शून्य ऐसा समाज भोग-विलास के लिए जीता है तथा नष्ट हो जाता है।

(ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के कथानक पर विचार कीजिए।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक ऐतिहासिक विषय से संबंधित है। इसमें गुप्तकाल की एक घटना को कथा का आधार बनाया गया है। गुप्त सम्राट रामगुप्त अपनी कायरता के कारण अपनी पत्नी 'ध्रुवस्वामिनी को शकराज के पास भेजने के लिए तैयार हो जाता है। परन्तु चन्द्रगुप्त शकराज की हत्या करके 'ध्रुवस्वामिनी' की रक्षा करता है। इसके बाद चन्द्रगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी का विवाह हो जाता है। विभिन्न घटनाओं के द्वारा कथावस्तु का विकास किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के कथानक से संबंधित है। अध्याय में निम्न बिन्दुओं की चर्चा की गई है–कथावस्तु के स्रोत, कथा का सार, कथावस्तु (कथा का आरंभ, कथा का विकास, कथा की परिणति), कथावस्तु का विश्लेषण (अंक-दृश्य योजना, दृश्य और सूच्य घटनाएं, आधिकारिक और प्रासंगिक कथावस्तु, विविध नाटकीय युक्तियों का प्रयोग, संकलन-त्रय, कथावस्तु विकास की परंपरागत प्रविधियां तथा कार्य-व्यापार की तीव्रता और आधोपांत संघर्ष) आदि।

कथावस्तु के स्रोत

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की कथा गुप्त काल से संबंधित है। चन्द्रगुप्त, रामगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी से संबंधित कथावस्तु ऐतिहासिक प्रमाणों पर आधारित है। विशाखदत्त रचित 'देवीचन्द्र गुप्तम' कुछ अंशों का प्रकाशन 1923 में हुआ। इससे गुप्तवंश के बारे में कुछ नये तथ्य प्रकाश में आए।

कथा का सार

गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था परन्तु चन्द्रगुप्त ने वह अधिकार छोड़ दिया, जिससे रामगुप्त शासक बन गया। ध्रुवस्वामिनी का विवाह चन्द्रगुप्त से होना था, परन्तु रामगुप्त से हो जाता है। रामगुप्त विलासी शासक सिद्ध होता है। वह अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी से भी उचित व्यवहार नहीं करता है। उसे संदेह है कि ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्त से प्रेम करती है। इतने में शकों का आक्रमण हो जाता है। शकराज अपने लिए स्त्रियों (ध्रुवस्वामिनी) की मांग करता है। रामगुप्त सन्धि के फलस्वरूप ध्रुवस्वामिनी को सौंपने के लिए तैयार हो जाता है। चन्द्रगुप्त शकराज को समाप्त कर देता है, परन्तु रामगुप्त क्रोध एवं घृणा में कोमा और मिहिरदेव का वध करके चन्द्रगुप्त को बन्दी बनाने का आदेश देता है। ध्रुवस्वामिनी इसका विरोध करती है। रामगुप्त ध्रुवस्वामिनी को भी बन्दी बनाने का आदेश देता है। चन्द्रगुप्त बंधन को तोड़कर अपने को स्वतंत्र घोषित करता है।

कथावस्तु

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की कथावस्तु तीन अंकों में विभाजित है। प्रत्येक अंक में एक ही दृश्य है। दृश्य की समस्त घटनाएं एक ही स्थान पर घटित होती हैं। मंच–सज्जा के विषय में भी लेखक ने स्पष्ट संकेत दिए हैं।

कथा का आरंभ

सम्राट समुद्रगुप्त चन्द्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित करता है, परन्तु चन्द्रगुप्त राज्य पर अपना अधिकार छोड़ देता है। ध्रुवस्वामिनी का विवाह भी चन्द्रगुप्त की बजाय रामगुप्त से हो जाता है। वह महादेवी बन जाती है, परन्तु वह इसे अभिशाप समझती है। रामगुप्त के पास ध्रुवस्वामिनी के लिए समय नहीं है। रामगुप्त को इस बात का सन्देह है कि ध्रुवस्वामिनी और चन्द्रगुप्त के मध्य प्रेम है।

कथा का विकास

कथा का विकास तब होता है जब रामगुप्त और शिखर स्वामी शकराज के सन्धि प्रस्ताव को ध्रुवस्वामिनी के सम्मुख रखते हैं। प्रस्ताव सुनकर ध्रुवस्वामिनी क्रोधित हो जाती है। वह रामगुप्त को अपनी मर्यादा तथा आत्मसम्मान का ध्यान दिलाती है, परन्तु जब रामगुप्त उसकी बात नहीं सुनता तो वह आत्महत्या करने का प्रयास करती है, परन्तु चन्द्रगुप्त उसे रोक लेता है। चन्द्रगुप्त गुप्त वंश के गौरव तथा ध ुवस्वामिनी की रक्षा के लिए तत्पर हो उठता है। कुछ देर बाद चन्द्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी उसके कक्ष में प्रवेश करते हैं। शकराज और चन्द्रगुप्त के बीच युद्ध होता है, जिसमें शकराज की मृत्यु हो जाती है।

कथा की परिणति

गुप्तवंश तथा ध्रुवस्वामिनी के सम्मान की रक्षा चन्द्रगुप्त कर लेता है। अब प्रश्न उठता है कि ध्रुवस्वामिनी की वास्तविक स्थिति क्या है? क्या किसी अयोग्य राजा को सिंहासन पर बैठने का अधिकार है? जो पति अपनी पत्नी को उपहारस्वरूप भेंट कर देता हो, क्या वह पति कहलाने का अधिकारी है? विजय का समाचार सुनकर रामगुप्त तथा अन्य लोग भी शक शिविर में पहुंच जाते हैं। परिषद के सदस्य रामगुप्त को सिंहासन के अयोग्य घोषित कर देते हैं। चन्द्रगुप्त राजा बन जाता है और ध्रुवस्वामिनी महादेवी।

(घ) 'नाखून क्यों बढ़ते है' का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–अंतर्वस्तु–निबंध के दो पक्ष होते हैं–भाव पक्ष और विचार पक्ष। किसी निबंध में विचारों की प्रधानता होती है, तो किसी में भावों की। कुछ निबंधों में भाव और विचार एक-दूसरे से गुंथे हुए भी होते हैं।

विचार पक्ष

निबंध की शुरुआत बच्चे के एक प्रश्न से होती है–''नाखून क्यों बढ़ते हैं?'' हम सभी को पता है कि आज नाखूनों का कोई भी उपयोग नहीं है, परन्तु एक समय ऐसा भी था जब मनुष्य को इन नाखूनों की आवश्यकता पड़ती थी। अपनी आदिम अवस्था में मानव अपने दांतों तथा नाखूनों से ही अपनी रक्षा करता होगा, परन्तु आज इनका वैसा उपयोग नहीं दिखाई देता, परन्तु ये फिर भी बढ़ रहे हैं। आज बढ़े हुए नाखूनों को अच्छा नहीं माना जाता। शायद इसलिए कि बढ़े हुए नाखून असभ्यता और जंगलीपन की निशानी है।

मानव प्रगति और हथियारों का विकास–यहां द्विवेदी जी प्रश्न उठाते हैं कि क्या मनुष्य बर्बरता से मुक्ति पाना चाहता है? फिर वह विनाशकारी हथियारों का निर्माण क्यों कर रहा है? पहले पत्थर एवं हड्डियों के हथियार बनते थे, फिर धातुओं के बनाये जाने लगे और आज परमाणु बम, एटम बम जैसे विनाशकारी हथियार मानव ने बना लिये हैं। हिरोशिमा का उदाहरण इस बात पर प्रश्नचिन्ह लगाता है कि हम सचमुच बर्बरता से मुक्त होना चाहते हैं।

विलास वृत्ति का उदात्तीकरण–द्विवेदी जी यह बताते हैं कि आज से दो हजार वर्ष पूर्व भारत में नाखूनों को सजाने तथा संवारने की कला का विकास हुआ था। यहां नाखूनों के उपयोग का संबंध मनुष्य की विलास वृत्ति से है।

मनुष्य की अभ्यासजन्य सहज वृत्तियाँ–द्विवेदी जी ने निबंध में यह प्रश्न उठाया है कि मनुष्य पशुता से मुक्त क्यों नहीं हो पा रहा है? नाखून के बढ़ने तथा हथियारों के निर्माण को वे पशुता मानते हैं। प्राणी-विज्ञान के अनुसार मनुष्य के बारे में कुछ ऐसी अभ्यासजन्य वृत्तियाँ हैं, जो बिना प्रयास के कार्य करती हैं, जैसे–नाखून बढ़ना तथा केश बढ़ना, इन्हें द्विवेदी जी ने अनजान स्मृतियां कहा है।

स्व का बंधन : भारतीय संस्कृति की विशेषता–'इंडिपेंडेंस' का अर्थ है–अन् + अधीनता = अनधीनता। इससे तात्पर्य है अधीनता का अभाव। परन्तु भारतीय सन्दर्भ में यह स्वतंत्रता अर्थात स्व की अधीनता या स्व का तंत्र है। इसे द्विवेदी जी भारतीय संस्कृति की विशेषता मानते हैं।

नये या पुराने का प्रश्न–द्विवेदी जी कालिदास के मत का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उनकी दृष्टि पुरातनपंथियों जैसी नहीं है। अतीत की भी कोई बात यदि उचित लगे, तो उसे अपनाने में कोई हर्ज नहीं है।

मनुष्य और पशु में अन्तर-सामान्य धर्म की खोज–द्विवेदी जी के अनुसार इंसान और पशु में चार बातें एक समान हैं–आहार, निद्रा, मैथुन तथा भय। परन्तु संयम, श्रद्धा, तप, त्याग, संवेदना जैसे गुण मनुष्य की पहचान हैं। ये गुण ही मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं।

भौतिक उन्नति और मनुष्यता का मार्ग–भौतिक उन्नति इस बात का प्रमाण नहीं है कि मानव पशुता की वृत्ति से मुक्त हो जायेगा। गांधी जी ने भी कहा था कि सिर्फ भौतिक उन्नति से ही सुख-शांति नहीं मिलेगी।

भाव पक्ष

निबंध का मूल प्रश्न वैचारिक नहीं है, बल्कि वह मनुष्य की भावनाओं का भी प्रश्न है। द्विवेदी जी मनुष्य की वृत्तियों को लेकर चिन्तित हैं। मनुष्य में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ होती हैं–एक ओर क्रोध, वैर तथा ईर्ष्या जैसी वृत्तियाँ हैं तो दूसरी ओर प्रेम, तपस्या, त्याग, संवेदना जैसी वृत्तियाँ। क्रोध, वैर तथा ईर्ष्या जैसी वृत्तियों के कारण ही लोगों में लड़ाई-झगड़ा होता है।

https://www.facebook.com/IGNOUAssignmentGURU https://twitter.com/IGNOU_Guru

लेखकीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति

निबंध में लेखक का व्यक्तित्व भी कहीं-न-कहीं आ ही जाता है। द्विवेदी जी की शैली कम विवेचनपरक और अधिक भावनात्मक है। उनके निबंधों की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं–

मानवतावादी–द्विवेदी जी का दृष्टिकोण मानवतावादी है। निबंध में उन्होंने मानव जाति के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। हथियारों के विकास के कारण सम्पूर्ण मानव जाति विनाश के कगार पर पहुंच चुकी है।

पाण्डित्य–द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता है, पाण्डित्य। द्विवेदी जी अपने निबंध को अपनी विद्वता से क्लिष्ट नहीं होने देते और न ही अपने पाण्डित्य से दूसरों को आतंकित करते हैं, उन्होंने निबंध में ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख कर अपनी विद्वता सिद्ध की है।

विचारक–विचारशीलता द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है। वे प्रश्नों पर गहनता के साथ विचार करते हैं। द्विवेदी जी अपनी बात को सामान्य अनुभव से प्रारंभ करते हैं। उन्होंने नाखूनों के बढ़ने की प्रवृत्ति को हथियारों की बढ़ती प्रवृत्ति से जोड़ा, जो मानव के विनाश का कारण बन सकती है।

संवेदनशील सौन्दर्य द्रष्टा–द्विवेदी जी के व्यक्तित्व की एक अन्य विशेषता उनकी संवेदनशीलता है। वे एक सृजनशील साहित्यकार थे। उनकी संवेदनशीलता ने उनके निबंधों को सरस, रोचक तथा आत्मीय बनाया है।

संरचना-शिल्प

द्विवेदी जी ने निबंध में एक नई शैली का प्रयोग किया है, जिसे ललित निबंध की शैली कहा जाता है। भाषा और शैली की दृष्टि से निबंध अत्यंत प्रभावशाली है।

भाषा

द्विवेदी जी की भाषा शुल्क जी से भिन्न है। द्विवेदी जी की भाषा परिष्कृत है। उनकी भाषा शैली विवेचनापरक नहीं है। उनकी भाषा में लचीलापन है।

शैली

द्विवेदी जी ने निबंध की एक नई शैली विकसित की, जिसे ललित निबंध की शैली कहा जाता है। द्विवेदी जी अपनी बात इस ढंग से कहते हैं कि उसका सौंदर्य सबको प्रभावित करे। उनके निबंधों में वैचारिक गूढ़ता की बोझिलता नहीं है। वे अपनी बात को अनुभूतिपरक बना देते हैं।

(च) हिंदी गद्य के विकास में द्विवेदी युग के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–द्विवेदी युग (1900-1920)–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से लेखकों की एक मण्डली तैयार हो गयी। इस मण्डली के लेखकों ने अपने लेखों से हिन्दी गद्य को समृद्ध किया था। इस युग में लेखकों की दृष्टि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अधिक थी, जिसके कारण इनकी भाषा में अनेक दोष नजर आते हैं। इसका कारण यह था कि अब अनूदित उपन्यासों को पढ़ने में लोगों ने रुचि दिखाई, परन्तु अनूदित करने वाले लेखकों ने हिन्दी की अच्छी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (1861-1938)–इन्हें अपने निबंध और समालोचनाओं के कारण अधिक लोकप्रियता मिली। इनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य भाषा का परिमार्जन करना था। द्विवेदी जी की कोशिश रहती थी कि खड़ी बोली में हिन्दी अपना मानक रूप ग्रहण करे। द्विवेदी जी राष्ट्रीय चेतना तथा नवजागरण की भावना को हिन्दी साहित्य के लिए आदर्श मानते थे। द्विवेदी जी ने मध्ययुगीन आदर्शों तथा रीतिकालीन कलारूपों को अस्वीकार कर दिया। द्विवेदी जी ने साहित्य को समाज से जोड़ा।

नाटक–हिन्दी में नाटकों की शुरुआत भारतेन्दु युग में हो चुकी थी। भारतेन्दु युग के सभी रचनाकारों ने नाटकों की रचना की, परन्तु द्विवेदी युग में नाटकों का वैसा विकास नहीं हो पाया। इस काल में बांग्ला, अंग्रेजी तथा संस्कृत के नाटकों के अनुवाद किये गये। नाटकों के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जयशंकर प्रसाद ने किया। उन्होंने नाटकों को साहित्यिक उत्कृष्टता प्रदान की।

उपन्यास–उपन्यास आधुनिक युग की प्रतिनिधि विधा है। उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा गया है। भारतेन्दु युग से पूर्व श्रद्धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा। भारतेन्दु युग में ही श्रीनिवास दास ने 'परीक्षा गुरु', राधा कृष्णदास ने 'निःसहाय हिन्दू', पं. बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी, मेहता लज्जाराम शर्मा ने 'स्वतंत्र रमा' तथा 'धूर्त रसिकलाल' जैसे उपन्यास लिखे।

https://www.facebook.com/IGNOUAssignmentGURU https://twitter.com/IGNOU_Guru

हिन्दी गद्य का विकास–द्विवेदी युग में पं. किशोरी लाल गोस्वामी ने कई उपन्यास लिखे। इन्होंने करीब 65 उपन्यास लिखे जिनमें प्रमुख हैं–'चपला तारा', 'तरुण तपस्विनी', 'रजिया बेगम', 'लीलावती' आदि। इसी युग में पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' (1899), और 'अधखिला फूल' जैसे उपन्यास लिखे। लज्जा राय मेहता ने 'हिन्दू गृहस्थ' तथा 'बिगड़े का सुधार' तथा ब्रजनन्दन सहाय ने 'राधाकांत' उपन्यास लिखे।

कहानी–भारत में आधुनिक कहानी की कहानी अधिक पुरानी नहीं है। मुंशी इंशाअल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' तथा राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द की 'राजा भोज का सपना' कहानी लिखने के छिट-पुट प्रयास थे। हिन्दी कहानी की रचना का समय 20वीं शताब्दी से प्रारंभ होता है जब प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद (1900 ई.) ने कहानी लिखना प्रारंभ किया।

निबंध और समालोचना–निबंध विधा का विकास भारतेन्दु युग में ही हो चुका था। इस युग के निबंधों में राष्ट्र और समाज के प्रति चिन्ता के अतिरिक्त विनोद प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। बाल मुकुन्द गुप्त के निबंधों में हमें विनोद प्रवृत्ति दिखाई देती है। बाल मुकुन्द गुप्त ने सामयिक और राजनीतिक परिस्थितियों को लेकर कई निबंध लिखे हैं।

द्विवेदी युग में समालोचना का भी प्रारंभ हुआ। वास्तव में समालोचना की वास्तविक शुरुआत द्विवेदी काल में ही हुई। इस समय आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित कई निबंध लिखे गये। द्विवेदी युग में समीक्षा को जिन विद्वानों ने लोकप्रिय बनाया, उनमें प्रमुख हैं–श्याम सुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा तथा बाबू गुलाब राय, परन्तु समीक्षा के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया।

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(ख) ध्रुवस्वामिनी का चरित्र-चित्रण

उत्तर–नाटक का प्रमुख पात्र 'ध्रुवस्वामिनी' है। नाटक की संपूर्ण घटनाएं उसी के इर्द-गिर्द घूमती हैं। नाटक के अन्य पात्र उसके व्यक्तित्व को समझने में सहायक हैं। ध्रुवस्वामिनी प्रारंभ से ही विरोधी स्थितियों से जूझती नजर आती है। रामगुप्त का व्यवहार भी उसके संघर्ष को एक विवशता में बदल देता है, परन्तु ध्रुवस्वामिनी अपमान को चुपचाप सहने वाली नहीं है। वह अपनी वेदना और आक्रोश को लगातार प्रकट करती है। ध्रुवस्वामिनी अपनी विवश स्थिति को भाग्य का लेखा मानकर चुपचाप बैठने वाली स्त्री नहीं है। वह अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाती है। वह एक जागरूक स्त्री है, जो अपने प्रति हो रहे अन्याय के प्रति सचेत है। ध्रुवस्वामिनी अपने पति रामगुप्त को उसके कर्त्तव्यों का ध्यान कराती है। वह रामगुप्त से अपने अधिकारों की मांग करती है। ध्रुवस्वामिनी अन्याय और शोषण की परंपरा पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए अपने आत्म-सम्मान की रक्षा तथा मानव मुक्ति की भावना को अपने जीवन का लक्ष्य मानती है, इसलिए वह रामगुप्त को ध्यान दिलाती है कि अपनी पत्नी को किसी और के पास उपहार के रूप में भेजना उसके लिए लज्जा की बात होगी। संकट की स्थिति में उसके भीतर की शक्ति जाग्रत होती है। आत्म-विश्वास के सहारे वह स्वयं अपनी रक्षा का मार्ग तलाश करती है। ध्रुवस्वामिनी के व्यक्तित्व में हमें नारी हृदय के विविध पक्षों का जीवंत एवं यथार्थ रूप देखने को मिलता है। रामगुप्त की ओर से आश्रय न मिलने के कारण क्रोध एवं बेबसी में वह आत्महत्या की ओर भी उन्मुख होती है। ध्रुवस्वामिनी परिस्थितियों से हार मानने वाली स्त्री का प्रतीक नहीं है। वह जीवन से पलायन करने वाला पात्र नहीं है। उसमें कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करते हुए जीने की ललक है। वह भाग्य के भरोसे बैठने वाली स्त्री नहीं है। वह अपना मार्ग स्वयं खोजने में विश्वास रखती है। वह दृढ़ता के साथ न्याय की मांग करती है। ध्रुवस्वामिनी का व्यक्तित्व एक आधुनिक स्त्री का व्यक्तित्व है, जिसमें अन्याय के खिलाफ खड़े होने की शक्ति है। अपने आक्रोश को वह व्यंग्यात्मक भाषा में व्यक्त करती है। वह वाकपटु है। स्त्री का अपमान करने वाले लोगों पर वह तीखे व्यंग्य करती है। ध्रुवस्वामिनी के चरित्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके अन्तरमन में चलने वाला द्वंद्व है। चन्द्रगुप्त की वाग्दता पत्नी होने के नाते वह चन्द्रगुप्त के प्रति अनुरक्त है, परन्तु परिस्थितियों के कारण उसका विवाह रामगुप्त से हो जाता है। उसे केवल अपमान और उपेक्षा सहनी पड़ती है।

चन्द्रगुप्त द्वारा सहायता का प्रस्ताव मिलते ही ध्रुवस्वामिनी के अन्तर में स्नेह का भाव जाग उठता है। सामाजिक बंधनों की मर्यादा तथा हृदय की भावना का द्वंद्व उसके मन में चलता है। ध्रुवस्वामिनी इस द्वंद्व का उत्तर खोजने में सफल रहती है। ध्रुवस्वामिनी के चरित्र में नारी मन के मनोविज्ञान तथा आधुनिक युग की बौद्धिक चेतना का स्वाभाविक मेल है। ध्रुवस्वामिनी के चरित्र में स्वच्छंदतावादी युग की सभी विशेषताएं देखने को मिलती हैं। वास्तव में ध्रुवस्वामिनी मध्ययुगीन नारी का प्रतीक नहीं है, बल्कि आधुनिक नारी का प्रतीक है।

(च) 'ठेस' की कथावस्तु

उत्तर–कथावस्तु–'ठेस' फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है। इस कहानी का नायक सिरचन नामक कारीगर है, जो चिक और शीतलपाटी बनाने में बहुत कुशल है। काम के दौरान वह किसी प्रकार की बाधा को सहन नहीं कर पाता है, जिसके लिए वह काम करता है, उनसे अपेक्षा करता है कि उसका सम्मान किया जाए तथा उसे अच्छा खाना दिया जाए, परन्तु बाद में सिरचन काम छोड़ देता है। वह काम क्यों छोड़ता है। यही कहानी का मूल्य कथ्य है। सिरचन कहानीकार के घर काम करने जाता है। मानू कहानीकार

https://www.facebook.com/IGNOUAssignmentGURU https://twitter.com/IGNOU_Guru

की बहन है। वह सिरचन को भी अपने भाई की तरह मानती है। इसलिए जब मानू के ससुराल वाले चिक और शीतलपाटी की माँग करते हैं, तो काम के लिए सिरचन को बुलाया जाता है। कहानीकार को यह मालूम है कि यदि सिरचन से काम लेना है तो उसका आदर-सत्कार करना होगा, परन्तु वहां सिरचन का अपमान होता है। सबसे पहला व्यंग्य कहानीकार की मंझली भाभी करती है, उसके बाद कहानीकार की चाची भी सिरचन के चटोरेपन पर व्यंग्य करती है। जब सिरचन चाची से पान के लिए जर्दा माँगता है, तो चाची भड़क उठती है तथा सिरचन को बुरी तरह डांटती है। इस अपमान के कारण सिरचन काम छोड़कर चला जाता है। लेखक सिरचन को मनाने जाता है, परन्तु सिरचन कभी भी इस काम को न करने का संकल्प लेता है। लेखक समझ जाता है कि एक कलाकार के दिल को ठेस लगी है।

लेखक अपनी बहन मानू को ससुराल छोड़ने जाता है। स्टेशन पर अचानक सिरचन आ जाता है। वह मानू को शीतलपाटी, चिक तथा कुश की बनी एक आसानी भेंट करता है। इसके लिए सिरचन मानू से कोई दाम नहीं लेता। इतने अपमान के बावजूद सिरचन का मानू के प्रति स्नेह, मानू को भावुक कर देता है। वह फूट-फूटकर रोने लगती है।

■■

IGNOU ASSIGNMENT GURU